SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

विनोबा के सर्वोदयी परिकल्पना में व्यक्ति की स्थिति

डेगलाल महतो, राजनीतिक शास्त्र विभाग,
पारसनाथ महाविद्यालय, इसरी बाजार, गिरिडीह, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
डेगलाल महतो, राजनीतिक शास्त्र विभाग,
पारसनाथ महाविद्यालय, इसरी बाजार,
गिरिडीह, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/12/2021
Revised on : -----
Accepted on : 27/12/2021
Plagiarism : 00% on 20/12/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Monday, December 20, 2021
Statistics: 25 words Plagiarized / 5346 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

fouksck ds loksZn;h ifjdYiuk esa O;fDr dh fLFkfr Msxyky egrks Lgk;d iz/;kid Jktuhfrd "kkL= foHkkx ikjlukFk egkfo|ky;] blh cktkj] fxfjMhg] >kj[kaM 'kks/k lkj& loksZn; dk vFkZ lHkh dk mn; gksrk gSA loksZn; fopkj vkSj 'kCn Hkkjrh; laLd`fr ds fy, ubZ ugha gSA ge lHkh blh fopkj dks ;gk¡ fQj ls lHkh ds lkeus ykus dk çkl dj jgs gSaA gtkjksa o"kksZ ls n`f"Vx.k viuh ok.kh essa ¼losZHkoUrq lqf[ou½ dk lans'k nsrs jgs gSaA xhrk ds loZHkqr fgrrsjrk% dk vk'k; Hkh loksZn; gha gSA bl çdkj loksZn; dk fopkj Hkkjrh; laLd`fr esa ges'kk ls gha fo|eku

शोध सार

सर्वोदय का अर्थ सभी का उदय होता है। सर्वोदय विचार और शब्द भारतीय संस्कृति के लिए नई नहीं है। हम सभी इसी विचार को यहाँ फिर से सभी के सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं। हजारों वर्षो से दृष्टिगण अपनी वाणी में (सर्वेभवन्तु सुखिन) का संदेश देते रहे हैं। गीता के सर्वभुत हिततेरताः का आशय भी सर्वोदय हीं है। इस प्रकार सर्वोदय का विचार भारतीय संस्कृति में हमेशा से हीं विद्यमान रहा है लेकिन व्यवस्थित और विधिवतरूप से इसे एक आधुनिक विचारधारा का रूप प्रदान करने का कार्य 20वीं सदी के प्रमुख महात्मा गाँधी के द्वारा किया। गाँधी ने सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग रस्किन की पुस्तक (Unto this last) का सार व्यक्त करने के लिए किया था, गाँधीजी द्वारा इस पुस्तक का गुजराती भाषा में सर्वोदय शीर्षक में अनुवाद किया गया। इस पुस्तक में मुख्य रूप से तीन विचारों पर जोर दिया गया था। सबके हित में हीं व्यक्ति का हित निहित है, एक नाई का कार्य भी वकील के कार्य के समान हीं महत्वपूर्ण है, क्योंकि सभी व्यक्तियों को अपने कार्य से स्वयं की अजीविका प्राप्त करने का अधिकार होता है और श्रमिक का जीवन हीं एकमात्र जीने योग्य जीवन है। गाँधी की मृत्यु के बाद उनके साथियों और समर्थकों ने विनोबा भावे के अनुसार (सर्वोदय समाज) नामक एक संगठन की स्थापना की और इस प्रकार सर्वोदय शब्द प्रचलित हुआ। गाँधी के बाद विनोबा सर्वोदय विचारधारा के अग्रदूत बने तथा वे इस शब्द को कई वर्षो तक लोगों में जिंदा रखे थे। इसकी सफलता समाज की स्थापना की तथा अनेक आंदोलन भी चलाये जैसे भुदान आंदोलन, ग्रामदान एवं संपति आंदोलन एवं संपति आंदोलन आदि। सर्वोदय विनोबा का एक स्वप्न था, वो इन्हीं उपायों से सर्वोदय को आसमान से भी ऊँचा ले जाना चाहते थे, ताकि सभी का उदय हो सके। सर्वोदय शब्द अगर न आया होता तो

स्वराज्य प्राप्ति के बाद या तो सभी ध्येय विहिन बन जाते। ध्येय क्या होना चाहिए इसका ठीक दर्शन सर्वोदय शब्द व्यक्त करता है।

सर्वोदय का प्रमुख कार्य हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में प्रेरणा देता है। सवोदय शब्द के अतंर्गत स्वराज्य के कार्यो को भी किया जाता है। सर्वोदय की पहली सीढ़ी देश को आजाद करना था, फिर इसके बाद सबका उदय था। सर्वोदय की कल्पना हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी मिलती है। वो मनुष्यों के साथ–साथ जानवरों को भी सुख में रखते थे। सर्वोदय मानव को प्रेम से व्यवहार कराना सीखाता है, जहाँ मानव दूसरे मानव पर आक्रमण नहीं करता, जहाँ सबकी चिन्ता की जाती है, जहाँ ऊँच–नीच भाव का नहीं है, ऐसा देश दुनिया में शायद हीं कोई होगा। सामाजिक क्षेत्रों के साथ साथ आर्थिक क्षेत्र में भी सर्वोदय के कुछ लक्ष्य है मशीनों के कारण आर्थिक विषमता और भी बढ़ी है। कुछ लोगों के हाथों में संपत्ति जमा होती है तो कुछ लोगों को काम हीं नहीं मिलता, अगर हम सर्वोदय विज्ञान ध्येय को सामने रखेगें तो ये परेशानियाँ मिट सकती है। सर्वोदय समाज का मुख्य कार्य प्रजा की चिन्ता मुक्ति सामाजिक संगठन के बल पर करना है, गुण विकास पर भी महत्व देता है। समाज को वर्ग विहिन बनाना, तथा विज्ञान के साथ–साथ करने की शक्ति साधन उन्नत होने चाहिए ताकि श्रम की बेगारी दुर हो जाए। सर्वोदय समाज एक सर्वोदयी समाज होगा तथा सहयोगी अर्थ व्यवस्था में शोषण का अभाव था। महिलाएँ कृषि मजदूर के हित अलग–अलग बल्कि एक साथ विचारधारा के रूप लेगें यह देहाती संस्कृति व राजनीति पर विशेष ध्यान रखती है। शहर एवं देहात का फासला कम है ये भी इसका गुण है।

मुख्य शब्द

सर्वोदय, आर्थिक विस्मता, समाज, महिलाएँ, प्राचीन ग्रंथ, आजादी, विचारधारा.

विनोबा जी अपने भारत को ऐसा बनाने की कोशिश कि जिसमें सभी एक दुसरे के लिए बराबर ऊँच–नीच की भावना हीं नहीं रहे। सर्वोदय शब्द उनके लिए एक ऐसा विचार था जिसका शाब्दिक अर्थ ''सम्पुर्ण उदय या तरक्की'' का जो इनके विचारों का एक दर्शन था।[1] सर्वोदय शब्द का गुण सभी के उदय तथा अंत तक उदय की कल्पना में है। सारी दुनिया का उदय भी होना चाहिए। सर्वोदय विनोबा की पसन्द का शब्द है क्योंकि सर्वोदय सभी के लिए है। ऐसा नहीं की भारत में बल्कि पुरे विश्व के लिए उन्होंने बात की है। विनोबा भारत से गरीबों का नाम मिटा देना चाहते थे। सर्वोदय गाँधी के सिद्धांत सत्य और अहिंसा पर भी पुरी तरह आधारित है। सर्वोदय के सिद्धांत मैं इस प्रकार समझा सकती हूँ ''सबके भलें मैं अपना भला है, वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक सी होनी चाहिए, सादा मजदुर एवं किसान का जीवन हीं सच्चा जीवन है।''[2] शुरू से अपने भारत को बिनोवा एक ऐसा देश बनाना चाहें जहाँ सभी कार्य करने वाले को बराबर की दृष्टि से देखा जा सके, शांति और खादी का संदेश देते है।

सर्वोदय कुछ का या बहुतो का या अधिकतम का उत्थान नहीं चाहता। हम अधिकतम के अधिक बन सुख से संतुष्ट नहीं हैं। हम तो केवल एक की, और सबकों ऊँचे और नीचे की, सबल और दुर्बल की बुद्धिमान तथा बुद्धिहीन की भलाई से हीं संतुष्ट हो सकते हैं। सर्वोदय ऐसे वर्ग विहिन, जाति विहिन, शोषणविहिन और समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समुह को अपने विकास के साधन और अवसर मिलेगे, क्रान्ति, हिंसा और अवसर मिलेगे। यह क्रान्ति, हिंसा और सत्य द्वारा हीं संभव है। शंकर राव देव ने सर्वोदय के आदर्श को व्यक्त करते हुए कहा है ''अहिंसा और सत्य के आधार पर स्थापित वर्गविहिन और जाति विहिन तथा जिसके किसी का भी शोषण नहीं है और जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का समूह को तो अपना सर्वांगीण विकास करने के अवसर और साधन प्राप्त हो सकते हैं। ऐसे समाज की स्थापना करना सर्वव्यापी समाज का साध्य है।''[3] 25 दिसम्बर 1975 को पवनार आश्रम में सर्वोदय सम्मेलन में सर्वोदय क्या है? इन प्रश्न का उत्तर देते हुए विनोबा भावे ने कहा कि सर्वोदय के पाँच आधार हैं:

1. जातिरहित और वर्गरहित समाज।
2. सार्वजनिक क्षेत्र में स्वच्छ और कुशल प्रशासन।

3. सामाजिक व्यवस्था का आधार के विकेन्द्रीकरण।
4. समस्त शक्ति का जनता को प्राप्त होना।
5. अधिकारी वर्ग द्वारा अपने आपको जनता का स्वामी नहीं, बल्कि सेवक समझना।

भारत में सर्वोदय का मतलब यह है कि समाज के लोगों के आपसी व्यवहार की सच्चाई, प्रेम और करूणा पर आधरित है। गलत आचरण करनेवाले सदस्य के बारे में यह सही गुणवतापूर्ण विश्वास होता है कि वह अपनी भूल समझकर सही मार्ग पर आ जायेगा।

अतः उसे सुधारने का प्रयास किया जाता है। समाज में समानता बनाये रखी जाती है और उपयोग की वस्तुएँ आवश्यकता पड़ने पर दुसरों के उपयोग के लिए दी जाती है। सर्वोदय का संदेश है कि पारिवारिक भावना पूरे समाज में पायी जानी चाहिए। सर्वोदय समाज की स्थापना के लिए निम्नलिखित तीन बातें आवश्यक है:

1. व्यक्तिगत पूँजी न रहे, किसी प्रकार की विषमता नहीं हो।
2. सभी काम सर्व सम्मति से हो।
3. हिंसा की जगह विचार की प्रधानता हो।

सर्वोदय के लक्षण हैं शोषणहीन समाज की स्थापना करना।

इसकी प्रक्रिया से मनुष्य का विचार परिवर्तन होगा तब हृदय परिवर्तन एवं जीवन परिवर्तन और अंत में समाज परिवर्तन होगा जिससे लक्ष्य की प्राप्ति होगी। सर्वोदय समाज की स्थापना का अर्थ किसी भी प्रकार की हिंसा से नहीं होगी, जिसके लिए प्रमुख साधन हैं विचार शिक्षण इसी के द्वारा हम सर्वोदय समाज की स्थापना कर सकते हैं। सर्वोदय का सही अर्थ समझने के लिए कुछ अन्य विचारधाराओं जैसे साम्यवाद, संघवाद और उपयोगितावाद और सर्वोदय के बीच पाये जाने वाले अंतर को जानना आवश्यक है। सर्वोदय का उद्देश्य समाज के समस्त वर्गो और व्यक्तियों का कल्याण है, जबकि अन्य विचार धाराओं समाज के किसी एक वर्ग विशेष के कल्याण पर हीं बल देती है। साम्यवाद, पूँजीवादी और बुर्जुआ तत्वों से घुण्णा करता है और उचित, अनुचित, हिंसक, अहिंसक सभी प्रकार के कोशिशों के आधार पर सर्वहारा वर्ग के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष करता है। पर सर्वोदय घनी, मध्यम वर्ग और निर्धन वर्ग के लिए सर्वोदय का लक्ष्य आर्थिक कल्याण तथा घनिक वर्ग का आध्यात्मिक कल्याण अर्थात् धनी वर्ग में अपरिग्रह और त्याग की भावना उत्पन्न कर उन्हें आत्मिक कल्याण की ओर बढ़ाना है। नागरिकों को सुख प्रदान करने की दृष्टि से सर्वोदय उपयोगितावाद् से भी आगे है। जहाँ उपयोगिता अधिकतम लोगों को अधिकतम सुख प्रदान करना खहता है वहीं सर्वोदय का उद्देश्य सभी का कल्याणकरना है। इस प्रकार सर्वोदय निश्चित हीं अन्य विचारधाराओं की तुलना में व्यापक है तथा पूरे जनता के सुख का समर्थक भी सर्वोदय भावना और आचरण का आशय यह है कि समाज के लोगों के आपसी व्यवहार की सच्चाई, प्रेम और करूणा पर आधारित होते हैं। गलत आचरण करने वाले सदस्य के बारे में यह बताया है कि वह अपनी भुल समझकर सही मार्ग पर आ जाए और अपने को सुधारने का प्रयास करें। सर्वोदय का संदेश है कि काटुम्बक भावना पुरे समाज में पाई जानी चाहिए।

सर्वोदय का मूलभूत सिद्धांत है सर्वागीण विकास यानी मानसिक, आस्मिक मानसिक, शारीरिक और भौतिक विकास जो चीर है वह पहले मानव है, इसलिए यदि उसमें मानवता का विकास होता तो वह चोर चोरी करना छोड़ेगा। जो साधु है, साधु के पहले वह मानव है, उसमें मानवता का उदय होगा। वह और बहुत अच्छा साधु बनेगा इस प्रकार चोर और साधु दोनों का भला होगा।

सर्वोदय समाज की स्थापना के लिए संत विनोबा तथा उनके सहयोगियों ने जो क्रांतिकारी कदम भारत में उठाये हैं, उनमें प्रमुख भूदान यज्ञ, ग्राम दान, सम्पति दान, श्रमदान, बुद्धिमान आदि हैं। भूदान यज्ञ का मतलब केवल भूमिपतियों से कुछ भूमि लेकरउसे भूमिहीनों में बांटने तक हीं सीमित नहीं है, वरन् यह तो एक आर्थिक और सामाजिक क्रांति लाने का गाँधीवादी मार्ग हे। व्यक्ति भुदान यह मानकर करता है कि समस्त भुमि परमात्मा की है तो भूमि के प्रति उसके मोह और स्वाभित्व में उसके घमंड की भावना में निश्चित रूप से कमी हो जाएगी। इस तरह

सच्चे हृदय परिवर्तन की एक लहर उठेगी जिससे सर्वोदय समाज की स्थापना होगी। भूदान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सभी प्रकार की एक शांतिपूर्वक समग्र क्रांति की ओर ठोस कदम है। भुदान एक अहिंसात्मक सामाजिक क्रांति है जिसकी पृष्ठभूमि में विकेन्द्रीकरण और स्वावलम्बन की भावनाएँ निहित है।

व्यक्ति विशेष के स्वामित्व स्थापित करने के लक्ष्य की पूर्ति के लिए ग्रामदान आंदोलन चलाया गया। इसका मतलब यह है कि ग्राम के वासी सभी व्यक्ति अपनी समस्त भूमि को सम्पूर्ण ग्राम के लिए समर्पित कर देते हैं और इस प्रकार भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व के स्थान पर सम्रग समाज का स्वामित्व स्थापित हो जाता है। वह सम्पूर्ण भूमि ग्रामवासी सभी परिवारों में उसकी अपनी–अपनी आवश्यकताओं के मुताबिक बाँटा जाता है। प्रत्येक परिवार अपने हिस्से की भूमि पर खेती करता है तथा आवश्यतानुसार अन्य परिवारों की सहायता ले सकता है। प्रत्येक परिवार तथा व्यक्ति जो अभी भी कार्य करता है वह अपने लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए करता है। पूरी भूमि की कुल उपज का एक भाग शिक्षा आश्रयहीन की सहायता, विवाह जैसे सामान्य आवश्यकताओं के लिए अलग उठाकर रख दिया जाता है। इसमें यह प्रभावशील रहा है कि प्रत्येक से उसकी शक्ति के अनुसार ली और और प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार दी।

ग्रामदान में कुटीर उद्योगों पर बल दिया जाता है और प्रत्यक्ष यहीं होता है कि गाँव जल्द हीं आत्मनिर्भर बन जाय।

एक बार कुछ लोगों ने विनोबा से पुछा कि आप सर्वोदय समाज की रचना कैसे करने जा रहे हैं ? तब वह कहते हैं कि यह एक ऐसा विचार है जो एक एक व्यक्ति के जीवन में दाखिल हो जाएगा तो आग के जैसा अपने आप फैल जाएगा।

समाज अच्छी तरह संगठित होना चाहिए। परिवार में समाज निष्ठा से जुड़ा हुआ समाज रहता है, वैसा समाज चाहिए। सर्वोदय समाज की कल्पना सब में है और मेरे में सब है इसलिए मैं मेरे निजी जीवन में व्यापार आदि में सामाजिक जीवन में और हर जगह असत्य का व्यवहार नहीं कर सकता। इसका ध्येय अधिक से अधिक लोगों के अधिक से अधिक सुख का उसमें बहुसंख्यकों और अल्पांख्यकों के झगड़ो का बीज है। सर्वोदय समाज एक महान क्रांतिकारी शब्द है। यह शब्द क्या कहता है? हमें चंद लोगों का उदय नहीं करना है, अधिक लोगों का उदय भी नहीं करना है, अधिक से अधिक लोगों से भी संतोष नहीं है सबके उदय से हीं हमें खुशी है। छोटे–बड़े दुर्बल सबल बुद्धिमान जड़ सबका उदय होगा। तभी हमें चैन लेना है।[8] विनोबा के अनुसार सर्वोदय का तत्वज्ञान कुल मिलाकर समन्वयात्मक है अर्थात् विचारकों को एकत्र लाने की शक्ति सर्वोदय के विचार में है। सर्वोदय का ध्येय सिद्ध करते हुए कहा कि पहले तो हमको मानवों के साथ प्रेम से व्यवहार करना सीखना है। जहाँ एक मानव दूसरे मानव पर आक्रमण नहीं करता है, जहाँ सबकी जिक्र की जाती है। जहाँ ऊँच–नीच, भेद–भाव नहीं है ऐसा देश दुनिया में शायद ही कोई होगा।

''विनोबा का सम्पूर्ण चिंतन और जीवन नैतिकता पर आधारित है। उनके अनुसार नैतिकता जीवन की अमुल्य निधि है, जिसके अभाव में जीवन संभव नहीं है। शिक्षा का प्रसार उनके सर्वोदय का प्रमुख लक्ष्य रहा है, क्योंकि इससे मनुष्यों के चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण होगा। सर्वोदय की शक्ति है सत्य में विश्वास'' विनोबा के अनुसार सर्वोदय क्रांति हृदय परिवर्तन, विचार परिवर्तन तथा परिस्थिति परिवर्तन की तीन रेखाओं से बना है।

इसका अर्थ है कि कुछ लोग तो विचार समझ जाने पर अपना जीवन बदल देते हैं कुछ के हृदय पर असर डालना पड़ता है। विनोबा के अनुसार सर्वोदय वास्तविक परिवर्तन तो जीवन के मूल्यों का हीं परिवर्तन है।[9] सर्वोदय समाज में सर्व आदमियों के सर्व गुणों का विकास होता है। विज्ञान तथा यन्त्रों बल पर आर्थिक समृद्धि हासिल करते जीवन संग्राम को यह खत्म करता है। साथ–साथ केन्द्रीकरण व प्रतिस्पर्धा की जगह विकेन्द्रित व सहयोगी अर्थव्यवस्था को निर्माण करता है। सर्वोदय समाज की विशेषता व्यक्ति की मन की भाषा की भावना बढ़ाकर उसके अंदर के गुणों का विकास करने की है। सर्वोदय के आदर्श अद्वैत है उसकी नीति है समन्वय यह क्रांति, अहिंसा और सत्य पर हीं संभव है। सर्वोदय यह स्वीकार करता है कि स्वतंत्रता 'समानता' न्याय तथा भ्रातत्व के आदर्शो

को अत्याधिक महत्व देता है इसलिए वह राज्य व्यवस्था का विरोधी है।

आधुनिक राज्यों में राजनीतिक दलों के कार्यकलाप का मुख्य उद्देश्य शक्ति प्राप्त करना होता है और उसके लिए वे संघर्ष चलाते हैं। कहा जाता है कि भारत में कुछ संगठित दलों में जनता चुनाव के दिनों में सचमुच स्वतंत्र नहीं होती यह सत्य है कि जनता के लिए राज्य के सभी महत्वपूर्ण कार्यो में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेना संभव नहीं हो सकता। सर्वोदय प्रतिनिधि लोकतंत्र की व्यवस्था का निश्चित रूप से शत्रु है, क्योंकि व्यवहार में प्रतिनिधि, लोकतंत्र, मंत्रिमंडल का अधिनायकत्व और दल का भ्रष्ट शासन होता है इसलिए सर्वोदय दल विहीन लोकतंत्र के सिंद्धांत को स्वीकार करता है। सर्वोदय के समर्थकों ने लोकतंत्र के कुछ दोष भी बताए जैसे राजनीतिक शक्ति की प्राप्ति से उत्पन्न भ्रष्टाचार सर्वत्र पर्याप्त आर्थिक तथा सामाजिक असमानता आदि। इन सब के लिए अनेक कदम भी उठाए गए हैं। सर्वोदय का आधारभुत सिद्धांत सबके सुख तथा उत्थान की प्राप्ति करना है। राजनीतिक दृष्टि से इसके दो महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। प्रथम वर्ग संघर्ष के सिद्धांत का खण्डन और दुसरे अल्पसंख्यकों के हितों तथा अधिकारों की रक्षा करना।

वर्ग सिद्धांत के सिद्धांत में यह धारणा निहित है कि सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत भिन्न हीं नहीं बल्कि परस्पर विरोधी हित हुआ करते हैं। इसके विपरीत सर्वोदय समाज को एक विशिष्ट प्रकार की वास्तविकता मानकर चलता है।

प्रायः यह मान लिया जाता हैं कि बहुसंख्यकों के निर्णय में अनिवार्यतः श्रेष्ठ गुण होता है। सर्वोदय इस मान्यता का खंडन करता है। यदि यह स्वीकार कर लिया जाय कि समाज एक अवयवी व्यवस्था है और उसके सभी सदस्य व्यक्तिगत रूप से नैतिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक होते हैं। सर्वोदय के अनुसार बहुसंख्यावाद के स्थान पर सर्वसम्मति के आधार पर कार्य करना होगा। अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए समानुपातिक प्रतिनिधित्व के जो तरीके निकाले गये हैं, उनसे सर्वोदयी विचारक संतुष्ट नहीं हैं बल्कि वे गाँधीजी की इस धारणा को स्वीकार करते हैं कि अनेक तथा अल्प के संख्यात्मक मापदण्ड के स्थान पर सम्पूर्ण समाज के कल्याण के आधारभूत सिद्धांत को अपनाया जाय। विनोबा का कहना है कि भूदान स्वयं एक प्रकार का सत्याग्रह है। उन्हें विवाद तथा समझौते में विश्वास है, किन्तु वे शान्तिमय संघर्ष के विरोधी नहीं है।[11] ऐसे भी अनेक अवसर हो सकते हैं जब किसी एकांकी नागरीक की प्रबुद्ध आत्मा को प्रतीत हो कि समूह का निर्णय सत्य को प्रतीत हो कि समूह का निर्णय सत्य के सिद्धांतो के विपरीत है। ऐसे अवसरों पर उसे सत्याग्रह का मार्ग अपनाना चाहिए।

विनोबा में एक सर्वोदयी समाज का निर्माण किया है जिसका आदर्श राज्यविहीन समाज प्रतिनिध्यात्मक लोकतंत्र और दलीय पधति का विरोधी पंचायती राज और विकेन्द्रीकरण का समर्थक समानता पर आधारित व्यवस्था का समर्थक लोकनीति और लोकशक्ति में विश्वास विश्वबंधुत्व और अन्तर्राष्ट्रीयता में आस्था है।

उन्होंने सर्वोदयी परिकल्पना में व्यक्ति की स्थिति को तीन भागों में बांटा हैः

1. सामाजिक।
2. आर्थिक।
3. राजनीतिक।

यहाँ हम इसपर बारी–बारी से अध्ययन करेंगे।

1. **सामाजिक संरचनाः** सामाजिक संरचना की दृष्टि से सर्वोदयी समाज का मुख्य आधार अव्यवा सिद्धांत ''समानता'' है। सर्वोदय किसी गणितीय समानता की बात नहीं करता बल्कि विवेकपूर्ण समानता का समर्थक है। उनकी समाज में ऊँच–नीच का भेद नहीं होना चाहिए।

विनोबा समानता के लिए सर्वोदयी विचारक कुछ आवश्यकताओं पर बल देते हैं। पहली आवश्यकता यह है कि समाज में शरीर श्रम को प्रतिष्ठा दी जाए, लोगों में एक कमजोरी हुजूर और मजूर में विभाजित है, इस खाई को मिटाने के लिए सर्वोदयी समाज में शरीर श्रमसंख्या संभव सबके लिए अनिवार्य करना चाहते थे।

दुसरी शरीर श्रम के कामों में विनोबा ने कृषि कार्य को प्राथमिकता दी है। लोग अगर ये कार्य करें तो यह सर्वोदय कार्य है। वह ग्रामीण सभ्यता का पक्षधर था तथा नगरों की बढ़ती हुई संख्या को समाजशास्त्रीय दृष्टि से हानिकारक मानता है।

तीसरी सर्वोदय का आग्रह है कि निजी सम्पति की मात्रा सीमित होनी चाहिए। निजी सम्पति का अधिकार व्यक्तिगत उपयोग की वस्तुओं तक रहना चाहिए। उत्पादन की वस्तुओं तक रहना चाहिए। उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व नहीं होना चाहिए जिनसे शोषण की प्रवृति को मिलाया जा सके।

चौथा सामाजिक विषमता का भारतीय समाज में घनिष्ठ संबंध वर्ण व्यवस्था से है तथा ये इस व्यवस्था को खत्म करना चाहते हैं। वे वर्तमान के खानपान, विवाह आदि के संबंध में प्रचलित फिजुल खर्ची को रोकना चाहते थे।

संक्षेप में वर्तमान में सर्वोदय समाज की सामाजिक संरचना समानता, शरीर श्रम और अपरिग्रह पर आधारित करना चाहते थे।

2. **आर्थिक संरचनाः** विनोबा भारत के व्यक्तियों की आर्थिक संरचना के संबंध में निम्न चार सिद्धांत बताते हैंः

1. सादा और सरल जीवन व्यतीत करना।
2. विकेन्द्रीकरण की भावना।
3. स्वालम्बन बने रहना।
4. प्रकृति सहयोगी हो।

सर्वोदय के अनुसार सादा और सरल जीवन उच्च मानसिक जीवन एवं आध्यात्मिक जीवन के लिए जरूरी है। वो भौतिक आवश्यकता की पुर्ति पर जोर देते हैं तथा उसकी भी सीमा से बाहर नहीं दौड़ना चाहिए।

विकेन्द्रीकरण से आशय यह है कि सर्वोदयी समाज में यथासंभव गृह उद्योगों द्वारा हीं उत्पादन होना चाहिए। सर्वोदय अपने क्षेत्र में केन्द्रीकरण नहीं लाना चाहता है तथा गृहउत्पादन बढ़ाने वाले अविष्कारों को प्रोत्साहन देता है। स्वालम्बन रहने का अर्थ है गाँव या पास के गाँवों से मिलकर बने क्षेत्र को अपनी आवश्यकताओं में स्वालम्बी होना चाहिए। सहयोग सिद्धांत का अर्थ यह है कि समाज में स्पर्द्धा का स्थान सहयोग को लेना चाहिए।

सर्वोदयी समाज में गृह उद्योग और छोटे उद्योग होगें। ग्राम या छोटे–छोटे क्षेत्र अपनी आवश्यकताओं में स्वाश्रयी होगें। इस समाज में रहन–सहन सादा होगा और स्पर्द्धा का स्थान सहयोग लेगा।

इसके अतिरिक्त ग्रामों में भूमि पर स्वामित्व गाँवों का होगा किन्तु किसानों की इच्छा पर निर्भर करेगा कि वे सामूहिक खेती करते हैं अथवा सहकारिता। व्यक्तिगत ग्राम पंचायत लगान वसुल करेगी और सरकार को देगी। विनोबा का विचार है कि गाँवों में एक सरकारी संख्या होगी तथा लगान अनाज के रूप में देना चाहिए। गाँव की आमदनी से जन सेवक, वैद्य, अपंग, बूढ़ों को मदद मिलेगा। विनोबा वर्तमान में नगरों का विस्तार नहीं चाहते क्योंकि इससे समाज शास्त्रीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही है, परन्तु वह नगर को समाप्त नहीं करना चाहते हैं।

3. **सामाजिक संरचनाः** आज की राजनीतिक संगठन से विनोबा संतुष्ट नहीं है। वह आज की लोकशाही को सही लोकशाही नहीं मानता, क्योंकि यह पुलिस और सिपाही पर हीं आखिरी भरोसा रखती है। नागरिक थोड़े से नौकरशाही लोगों के हाथ की कठपुतली बनी है, इसलिए सर्वोदय इसको बदल कर लोकनीति बनाना चाहता है। सर्वोदय इस तंत्र को बदलकर लोगों को सहीं रास्तों पर रखने के लिए पुलिस, सेना आदि की जरूरत न पड़ने देना चाहती है। सामाजिक व्यवस्था को ऐसा बनाना चाहता है कि व्यक्ति को अधिकतम स्वतंत्रता प्राप्त हो, पर वह उसका दुरूपयोग न करें।

सर्वोदय अपने समाज में चार बातों को आवश्यक मानता हैः

1. लोक कल्याणकारी राज्य के स्थान पर लोक कल्याणकारी समाज की स्थापना की जाए।

2. समाज में निर्णय लेने की प्रणाली दोषपूर्ण है। निर्णय सर्वसम्मति से हो या विशाल बहुमत से।
3. वर्तमान दलीय व्यवस्था को धीरे–धीरे समाप्त कर देना चाहिए क्योंकि यह मतभेदों को बढ़ाती है।
4. सर्वोदय प्रचलित निर्वाचन प्रणाली को दूषित मानते हैं क्योकि इसमें धन का अपव्यय होता है, शक्ति का अपव्यय होता है।[3]

वर्तमान में, पुरे देश में धर्म भेद प्रचलित शिक्षा का आभाव है, इसके लिए गाँवों में व्यक्ति को हर सुविधा से नवाजा जाना चाहिए। शहरों के दोष व दुर्गुण गाँवों लगी जिसके कारण संघर्ष कम हमें जोरों से फैल रहे हैं। गाँवों का विकास इस तरह से होना चाहिए कि शहरों को प्रतिष्ठा आप हीं आप कम हो जाये और शहर ऐसे टुटे कि शहर और गाँव का भेद हीं न रहने पाए। यातायात का साधन बढ़ाया जाए शिक्षा और सहकारिता का प्रचार जोरों से होगा। सर्वोदयी समाज की सामाजिक आर्थिक और राजनीति संरचना का जो चित्र प्रस्तुत किया गया है, उससे हमारे समक्ष सर्वोदय के अनेक आधार स्पष्ट है। विनोबा के समय से हीं विज्ञान एवं मशीनों की तरक्की होने लगी जिसके कारण संघर्ष कम हो गया है पर प्रतिस्पर्द्धा बढ़ गई है। आधुनिक आदमी फायदा मौज शौक और इन्द्रिय मांग की ओर अधिक आकर्षित हो गया है। सारा ध्यान अधिक सुरक्षा की ओर बढ़ रहा है तथा नैतिक सुरक्षा की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जा रहा है। सर्वोदय के कार्यक्रमों में एक बात कहा जा सकता है कि व्यक्ति की सदभावना बढ़ाने पर काफी जोर दिया हैं।

आज एक ओर से हमारा समाज संगठन भिन्न हो गया है तथा दूसरी ओर से पश्चिम की संस्कृति के प्रभाव के कारण हमारे यहाँ भी कल्याणकारी राज्य की परम्परा बनती जा रही है। कल्याणकारी राज्य बाह्य नियंत्रण पर आधारित है और कल्याणकारी मात्रा भी बनाये जा रहे हैं। इतना हीं नहीं, सारी जनता के जीवन बहार का आयोजन केन्द्र करती है जिससे वे अपने जीवन के प्रति उदासीन हो जाते हैं। जीवन की सफलता तो उसे उच्च ध्येय की साधना में प्रतीत होती है, इसलिए इस व्यवस्था को बनाने के लिए सर्वोदय एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहता है। समानता यह आज का सबसे प्रमुख लक्षण है, जहाँ प्रजा में हर तरह से असमानता बढ़ाने का काम जारी है वहाँ सर्वोदय एक समान संगठन का निर्माण करेगा। वर्तमान में कल्याणकारी समाज व्यवस्था तथा नई ज्ञान के जरिए समाज को वर्ग विहिन बनाने की साधना की जा सकती है। विज्ञान के साथ–साथ मेहनत करने के साधन उन्नत होने चाहिए ताकि श्रम की बेगारी दुर हो जाए। आज की लोकतंत्र को बहुत दुषित मानते हुए सर्वोदय ने इसे अस्वस्थ्य माना है। सर्वोदयी विचारक दल विहिन लोकतंत्र की स्थापना के पक्ष में है। आधुनिक लोकतंत्र पर आरोप लगाते हुए विनोबा कहते हैं कि यह तो नाममात्र का जनता का शासन है। यह तो इने–गिने लोगों के बीच केन्द्रित है। मंत्री सत्ता प्रिय है अनेकों लोगों के हित से कोई मतलब नहीं। अप्रत्यक्ष लोकतंत्र में चुनाव दलीय आधार पर लड़े जाते हैं। चुनाव भय पर आधारित है।

इन सभी कर्मियों को दूर करते हुए विनोबा अपने समाज/राज्य में दलविहिन लोकतंत्र लाना चाहते हैं। इस तरह के व्यवस्था के लिए जिन कार्यकर्ताओं को गाँव के सभी निवासी सर्वसम्मति से अपना सेवक समझते हैं उन्हीं का नाम निर्देशित करना चाहिए। वे ग्राम पंचायत को सदस्य होगें, थाना पंचायत को ग्राम पंचायत के सदस्य चुनेगें। आगे उनका समाज दलविहीन होगा। वह वर्तमान दलीय राजनीति में हस्तक्षेप करने से इन्कार करता है। राजनीतिक दल सर्वोदय का कार्य करेंगे तथा उसके प्रचार–प्रसार में हाथ बाँटेगें। सर्वोदय जनता के सामने एक ऐसा कार्यक्रम रखना चाहते हैं जो सबको स्वीकार होगा, सब लोग मतभेद को भुलकर साथ–साथ रहेगें। इससे देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा और इस प्रकार जनशक्ति का विकास होगा। इसके समाज/राज्य में विधान मंडलों और संसद में दलीय उग्रता तथा मतभेदों को समाप्त किया जाएगा। लोग किसी दल के डर से नहीं बल्कि अपने मन से सभी निर्णय को लेगें। सर्वोदय हमें तुच्छ स्वार्थो से उपर उठने और समन्वयकारी प्रवृति का विकास करने का उपदेश देता है। सर्वोदय का आदर्श उद्धैत है और उसकी नीति है समन्वय यह क्रांति अहिंसा और सत्य द्वारा हीं संभव है। भारत की शक्तिहीन जनता शताब्दियों से गतिशील अभिक्रम तथा स्वालम्बन की आदत खो बैठी है और पूर्णतः राज्य के अधिकारों पर निर्भर होती जाती ह। किन्तु हमारी जनता का नैतिक चरित्र काफी नष्ट हो चुका है, और पंचायतों भी जातिवाद तथा अन्य प्रकार के कुत्सिव तत्वों और प्रभावों के अखाड़े बन गई है।

विकेन्द्रीकरण की प्रमुख समस्या यह है कि पंचायते इस ढंग से कार्य करें कि वे गाँव में गणतंत्रवाद तथा सामुदायिक लोकतंत्र के प्रशिक्षण का केन्द्र बन सके। सर्वोदय के सर्मथकों का एक तर्क यह है कि विकेन्द्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था के अतंर्गत मतभेद कम होता है। अतः दलविहीन लोकतंत्र को साक्षात्कृत करने की अधिक आशा हो सकती है।

सर्वोदय की धारणा के अनुसार ग्रामराज का आदर्श तभी साक्षात्कृत किया जा सकता है, जब सम्पूर्ण राजनीतिक सत्ता का प्रयोग ग्रामवासी स्वयं करें और जनता द्वारा प्रशासन के ये क्षेत्र केन्द्रीय सरकार की इच्छा को यांत्रिक रूप से क्रियान्वित करने के केन्द्र मात्र नहीं होगें, बल्कि वे स्वशासन की जीवन्त इकाईयों के रूप में कार्य करेगें। सर्वोदय के समर्थकों का यह विचार पुर्णतः सही है कि यदि ग्राम के स्तर पर स्वशासन अथवा वास्तविक लोकतंत्र को क्रियान्वित किया जाय तो वह अधिनायक वादी प्रवृतियों को रोकने का सबसे शक्तिशाली साधन होगा। कुछ लोगों का डर है कि यह ग्रामराज एक ऐसे सामान्तर शासन का रूप ले सकता है जिसके पास अन्य शासकीय इकाईयों के साथ तालमेल स्थपित करने के कोई साधन न हो। किन्तु यह भय निर्मूल है, क्योंकि इस योजना के अंतर्गत केन्द्रीय प्रशासन को समाप्त करने का कोई विचार नहीं है। जब तक केन्द्रीय सत्ता जब तक वह विद्यमान है, रेलगाड़ी खतरे की जंजीर के समान होगी। यात्रियों का ध्यान सदैव इस जंजीर पर केन्द्रित नहीं रहता किन्तु संकट के समय वे उसका प्रयोग करते हैं। सर्वोदय स्वशासन को सभी क्षेत्रों में स्थापित करना चाहता है। इसका अर्थ है कि जनता उठ खड़ी हो और सहयोगमूलक कार्यो में सजग और सक्रिय रूप से भाग लें। यदि चोटी के अधिकारी विकृत और भ्रष्ट हो सकते हैं, तो ग्राम स्तर के छोटे कार्यकर्ताओं के संबंध में भी यह डर हो सकता है। अतः आवश्यक है कि उन्हें हर प्रकार के भ्रष्टाचार से बचाने के लिए प्रभावकारी उपाय किये जाये। सर्वोदय जनता को राजनीतिक कार्यकलाप को केन्द्र बनना है, न कि केन्द्रीय संसद अथवा मंत्रिमंडल को राजनीति के स्थान पर लोकनीति को प्रतिष्ठित करने का सही महत्व है। विनोबा का कहना हैः ''स्वराज्य आ चुका है। किन्तु क्या जनता के उसके कल्याणकारी प्रभाव की अनुभूति होती है?'' स्वराज्य अथवा स्वशासन शब्द में हीं विकेन्द्रीकरण का भाव निहित है। इसलिए इस सिद्धांत को पुरी तरह से लागु करना है। जीवन के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक हर क्षेत्र में क्रियान्वित करना है। इस केन्द्रीकरण के परिणाम स्वरूप जनता की स्वतंत्रता को उत्तरोतर घाटा हुआ और उसकी दरिद्रता एवं कष्टों में उतरोत्तर वृद्धि हुई। ग्रामदान के द्वारा आज के दिल्ली राज को ग्रामराज अथवा रामराज में परिवर्तित किया जा सकता है। ग्रामराज के स्थगित होने पर प्रत्येक गाँव एक छोटे से राज्य का रूप धारण कर लेगा और सभी विभाग सुयोग्य पूर्वक गाँव में हीं काम करेगें। सर्वोदय आंदोलन का आग्रह है कि जिन नीतियों और पद्धतियों से सच्चे अहिंसात्मक लोकतंत्र की स्थापना हो सके उनको क्रियान्वित करने के लिए तत्काल कदम उठाये जाए।

निष्कर्ष

सर्वोदय का दर्शन सरल और स्पष्ट दर्शन है पर साथ हीं कठिन और जटिल भी है। यह दर्शन राजनीतिक और सामाजिक पुननिर्माण की योजना को बनाने का एक शक्तिशाली प्रयत्न है जो गाँधीजी की निष्ठा पर आधारित है। सर्वोदय ने आधुनिक राजनीति शक्ति के केन्द्रीकरण तथा वैयक्तिक स्वतंत्रता के शत्रुओं के विद्ध चेतावनी की महत्वपूर्ण सेवा की है। सर्वोदय वर्तमान राजनीति के लिए नहीं है। राजनीति का पक्षपाती है। राजनीति में जहाँ शासन मुख्य है वहाँ लोकनीति में अनुशासन राजनीति में जहाँ सत्ता है लोकनीति में स्वतंत्रता। राजनीति में जहाँ नियंत्रण है, वहाँ लोकनीति में संयम। राजनीति में जहाँ सत्ता की स्पर्द्धा, अधिकारी की स्पर्द्धा मुख्य है वहाँ लोकनीति में कर्तव्यों का आचरण सर्वोदय का क्रम यहीं है कि अनुशासन की ओर सत्ता से स्वतंत्रता की ओर नियंत्रण से संयम की ओर और अधिकारों की स्पर्द्धा से कर्तव्यों के आचरण की ओर बढ़े। सर्वोदय के आदर्श की व्यवहारिता पर संदेह किया जाता है इस दर्शन को स्वप्नलोकीय तक कह दिया गया है। लेकिन क्या हम इस तथ्य से इंकार कर सकते हैं कि सर्वोदय दर्शन नैतिक मूल्यों का जय घोष करता है। आधुनिक लोकतंत्र के देशों को स्पष्ट करता है, इन दोषों को स्पष्ट करता है इन दोषों को मिटाने के महत्वपुर्ण सुझाव प्रस्तुत करता है? क्या हम इस बात को झुठला सकते हैं कि भुदान आंदोलन किसी अंश तक सफल हुआ है? क्या हम इस सच्चाई से इंकार कर सकते हैं कि हमने बहुतों

का हृदय परिवर्तन कर दिया है और अनेक लोगों ने सर्वोदय के यज्ञ में अपना जीवनदान ईमानदारी से दिया है ? जब ये बातें सच है तो हमें सर्वोदय व्यवहारिता पर संदेह नहीं करना चाहिए। कमी इस बात की सर्वोदय दर्शन को व्यावहारिक जामा पहनाने के लिए कार्यकर्ताओं की एक बड़ी फौज चाहिए जो अभी तैयार नहीं हो सकी है। हजारों की संख्या में शान्ति सैनिक काम कर रहे हैं पर भारत जैसे विशाल देश में इनकी संख्या लाखों में होनी चाहिए।

फिर सर्वोदय जिस प्रकार की सामाजिक और नैतिक क्रान्ति लाना चाहता है वह दो, पाँच या दस वर्षो में पूरी नहीं हो सकती, उसके लिए लम्बें समय धैर्य तथा निरन्तर प्रयत्न की आवश्यकता है। हम दादा धर्माधिकारी के इन शब्दों से असहमत नहीं है कि सर्वोदय मानता है कि सबका उदय कोरा स्वप्न आदर्श नहीं है। यह आदर्श व्यवहार्य है यह अमल में लाया जा सकता है। सर्वोदय का आदर्श ऊँचा है, यह ठीक है, परन्तु न तो वह अप्राप्त है और न असाध्य है। आज जो मानवशक्ति की खोज हो रही है उसका उदय सर्वोदय से हीं संभव है। 20वीं शताब्दी में संभवतः यहीं एक ऐसा राजनीतिक दर्शन है जिसका आग्रह है कि लोकतंत्र तथा करोड़ों लोगों के स्वशासन को वास्तविकता का रूप देना है। यदि हम दलीय अधिनायकत्व राज्य के निरंकुशवाद तथा गणराज्य के प्रत्येक नागरीक के लिए स्वराज्य तथा लोकतंत्र को सुलभ बनाना है। इस देश का हर नागरीक बल्कि सम्पूर्ण विश्व का हर नागरीक एक पवित्र सत्ता है। मैं सर्वोदयी राजनीतिक स्वशासन को वास्तव में साक्षात्कृत करने का आधारभूत तथा संकल्प प्रेरणादायक है। उसका स्वप्न निश्चय की स्फूर्ति प्रदान करता है। सर्वोदय का राजनितीक दर्शन तत्वशास्त्रीय आधार पर राजनीतिक तथा सामाजिक पुननिर्माण की योजना को निर्मित करने का एक शक्तिशाली बौद्धिक प्रयत्न है। यह स्वतंत्र भारत की व्यवस्था के अंतर्गत गाँधीजी के विचारों को विकसित करने का एक निर्दोष प्रयत्न है। गाँधीजी ग्राम राज्य के समर्थक थे। वे हिंसा की पुजा करने वाले आधुनिक पाश्चात्य लोकतंत्र के कटु तथा अथक आलोचक थें। सर्वोदय ने गाँधी एवं विनोबा को विकसित करने का प्रयत्न किया है।

संदर्भ सूची

1. विनोबा, 1952 *सर्वोदय विचार,* सस्ता साहित्य प्रथम उल्लेख विनोबा,1952, पेज नं. 15–21, द्वितीय उल्लेख मंडल प्रकाशन विनोबा 1952, पेज 89।
2. अवस्थी आनन्द प्रकाश, *राजनीतिक विचारक,* प्रथम उल्लेख, आगरा नवरंग ऑफसेट प्रिन्टर्स, पेज 301, 315।
3. सर्वोदय योजना समिति द्वारा संयोजित,सर्वोदय योजनाः प्रथम उल्लेख समिति सर्वोदय योजना, 1953 नई दिल्ली, पेज 4, सस्ता साहित्य मंडल।
4. पटेल झवेर भाई, 1964, *सर्वोदय समाज के लक्षण,* दिल्लीः ग्राम आयोजन – 49 प्रकाशन, पेज 4।
5. मिश्रा रविन्द्र एन, *कृषिक परिवर्तन एवं भूमि सुधार मिश्रा,* (भारत की राज्यीय राजनीति) गाजियाबाद न्युप्रिन्ट इंडिया, पेज 97।
6. दिल्ली का भाषण 24 जून 1949, पेज नं. 72–85, विनोबाःसर्वोदय विज्ञान।
7. सर्वोदय विचार, विनोबा, पेज 14।
8. गाँधी एम. के., सर्वोदय, पेज 3।
9. ए.पी. अवस्थी, राजनीतिक विचारक, पेज 304।
10. धर्माधिकारी दादा, सर्वोदय दर्शन, पेज 6–7।
11. शर्मा ब्रजमोहन, *सर्वोदय क्यों और कैसे,* पेज 7, 54।
12. झवेर भाई पटेल, 1964, सर्वोदय समाज के लक्षण, पेज 32।

13. विनोबा, श्रमदान प्रश्नोत्तरी।
14. सर्वोदय प्रदशर्नी, गाँधीनगर (जयपुर) 14 दिसंबर 1948, पेज 17।
15. विनोबा, 1952 सर्वोदय विचार, पेज 19।
16. नारायण जय प्रकाश, *ए पिक्चर ऑफ सर्वोदय सोशल ऑडर,* पेज 43।
17. नारायण जय प्रकाश, *क्रांति का आधुनिक प्रयोग*।
18. भावे विनोबा, स्वराज्य शास्त्र, पेज 43–47।
19. सर्वोदय संयोजन, पेज 93 (सर्वसंघ सेवा प्रकाशन)।
20. विनोबा, लोकनीति, पेज 121।

****